रात्री क्लास 21-4-68 ओमशान्ति देवीगुण धारण है?

****

यह नये बच्चे कहां आये हैं? नशा चढ़ता है कि ईश्वरीय युनिवर्सिटी में आये हैं। सारी युनिवर्सिटी को फिरा कर पतितसे पावन देवता बनाते हैं। यह समझते होंगे दिल में यहपुरानी दुनिया अभी बदल रही है। फिर नई दुनिया मेंदेवतायें राज्य करेंगे। यहां ही मनुष्य से देवता बनने आये हैं। और सेकण्ड में नई दुनिया की स्थापना करने वाले बेहद के बाप को जानने से जरूर उनके एडाप्टेड बच्चे हो जावेंगे। लौकिक बाप को छोड़ पारलौकिक बन जावेंगे। एडाप्ट बननेसे विश्व की बादशाही मिलती है। अनुभव सुनाते हैं हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो जरूर स्वर्ग का वर्सा देते होंगे। बच्चे जानते हैं कि हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने आये हैं। भक्ति का फल भगवान क्या देते हैं। जरूर भक्ति के बाद है सदगति। सदगति कहा जाता है सतयुग को। कलियुग मे होती है दुर्गति। बाप है बेहद का। वह सर्व का सदगति दाता है। जब कि सर्व की सदगति दाता एक है और तो हो न सके। वह सभी हैं भक्ति। जब तक सदगति दाता को न पहचाने। यहपण्डे पाण्डव ही बापदादा का परिचयदे सकते हैं। जब पक्का निश्चय हो तब ले आना चाहिए। कच्चे को नहीं ले आना है। ऐसे भी नहीं कच्चे को ले आने से पक्का हो जावेगा। नहीं। पक्का होगा तो समझेंगे स्वर्ग का वर्सा पक्का पावेंगे। स्वर्ग में है बादशाही। उस में क्या पद पावें। नम्बरवार पद तो है ना। फर्स्ट क्लास राजाई सेकण्ड क्लास शाहूकार, थर्ड क्लास शाहूकार। थर्ड क्लास के गरीब हो कहेंगे। फर्स्ट क्लास बहुत शाहूकार, सेकण्ड क्लास है साधारण। बाप कहते हैं मैं भी साधारण तन में आता हूं। क्योंकि नहीं तो बिगर पैसे सम्भाल कैसे सकेंगे। बाप ने रथ जो लिया है ड्रामा अनुसार नूंध है। इनको ही भाग्यशाली रथ बनाते हैं। यह है पहले नम्बर में भाग्यशाली। जिन में मैं प्रवेश करता हूं। 100% भाग्यशाली फिर दुर्भाग्यशाली बने। तो फिर उनमें प्रवेश करता हूं। उन्हों को ही फिर भाग्यशाली बनना है। नजदीक हुआ था। यह बच्चे तो समझते होंगे बाबा क्या समझाते हैं। वह आत्माओं का बाप है, प्रजापिता ब्रह्मा है शरीरों का बाप। शिव बादशाही रचना रचते हैं। तो ब्राह्मण हुये नई रचना। नईदुनिया वास्तव में ब्राह्मणों की है। सतयुग से भी। वर्णों कोदेखेंगे तो पहले चोटी। फिर देवता आते हैं। पूछेंगे देवता बड़ा या ब्राह्मण। कहेंगे ब्राह्मण बड़े। ब्राह्मण हैं संगम युगी। इन्हों को भगवान पढ़ाते हैं। देवताओं को देवतायें पढ़ावेंगे। यह इतने बड़े हैं। परन्तु जानते नहीं हैं गीता में भी ब्राह्मणों की बात है नहीं। क्योंकि गीता का भगवान ही देवता को लिख दिया है। तो ब्राह्मण को गुम कर दिये हैं। बाप ने राजयोग सिखाया ही है नर से नारायण बनने का। न कि कृष्ण। देवता कहां से आया। मनुष्यों को देवता बाप ही बनाते हैं। बातें तो सहज है। फिर दैवी गुण भी धारण करनी है। तुम तो बतलाता हूं कि मैं आया हुआ हूं। अभी पावन बनने लिए विकारों पर जीत पहनो। काम विकार के कारण ही विघ्न पड़ते हैं। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। क्योंकि तुम रावण का वर्सा (अपवित्रता) छुड़ाकर राम का वर्सा (पवित्रता) देते हो तो दुश्मन हो पड़ते हैं। उन्हों के लिए है अमृत का प्याला। बाप कहते हैं यह जहर का प्याला है। तो इसलिए झगड़ा करते हैं। कमाल ही नहीं देते। बाप तो भोला भण्डारी है। परन्तु जगह ही नहीं देते क्योंकि रावण का वर्सा दुड़ाते हो। तो दुश्मन बनते हैं। बेहद के बाप का वर्सा है अमृत। वह हद के बाप का वर्सा देते हैं। औरसत्संगों में यह बातें नहीं होती। वहां जो सुनाते हैं वह सत्य2 करते रहते हैं। कहना चाहिए तुम जो कुछ पढ़े हो, हम भी पढ़े हैं इसलिए वह न सुनाओ। हम जोसुनाते हैं वह कब सतयुग से लेकर कलियुग तक सुनती ही नहीं है संगम युग पर हम बैठे हैं। ज्ञान सागर बाप हां बैठ हमकोसुनाते हैं। वह सभी हैं भक्ति के सागर। बाप है सदगति का सागर। ज्ञान सागर है ना। बाप जिस प्रकारसमझाते हैं वह नोट करना है। रचयिता बाप को जानने से बेड़ा पार होता है। अर्थात शान्तिधाम फिर आवेंगे सुखधाम। यह पढ़ाई है नई दुनिया के लिए। याद की यात्रा शान्तिधाम के लिए है। 84 का चक्र सिखलाते हैं वह है सुखधाम के लिए। जितनी ही अच्छी रीत समझे

समझावेंगे पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। वह तो स्टुडन्ट के हाथ है। टीचर कोरेसे नहीं कहा जाता कृपा आशीर्वाद करो। पढ़ना है। तुम जानते हो कौन रेगुलर पढ़ते हैं। कौन अपसेन्ट होते हैं। अपसेन्ट एक दिन भी होंगे तोफिर वह ड्रोप हो जावेंगी। चार्ट भी खराब हो जावेगा। क्वालीफिकेशन कम हो जावेगा।

अच्छा अभी अपने को आत्मा समझ बाप को लव से याद करो। बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। तुम भी बच्चे हो। यह भी बच्चा है। यह बहुत याद करता है। ऐसे नहीं कहते जल्दी स्वर्ग में भेजो। मैं तो आपके साथ ही रहूं। फिर तो कब आप को साथ मिलेगा नहीं। फिर 5000 वर्ष बाद मिलेंगे। ऐसे2 बाप को याद करो। माया घड़ी भुलाये देगी। परन्तु टाईम वेस्ट न करना चाहिए। बाप को याद करने से वर्सा और चक्र भी याद आवेगा। सारा मदार है याद पर। भक्ति में तो ठोकर ठेर धक्के खाये हैं। अभी धक्के खाने की दरकार नहीं। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। अच्छा स्थानी बच्चों को स्थानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। स्थानी बच्चों को स्थानी बाप का नमस्ते।

रही हुई पायन्ट्स:- (24-4-68 प्रातः क्लास)

सतयुग में एकराजय है कलियुग में अनेक राज्य है। इसलिए तुम पूछते भी हो नर्कवासी हो या स्वर्गवासी। परन्तु मनुष्य है जैसे बन्दर। पढ़ा और फेंक दिया। हम कहां हैं, यह भी समझते नहीं। यह है ही कांटों का जंगल। जंगल में जनावर रहते हैं। वह है फूल फूलों का बगीचा। तो अभी फालो करो। फादर और अन्य बच्चों को। तब ऊंच बनेंगे। समझाते तो बहुत ही हैं। समझने वाले समझे कोई तो सुन कर अच्छी रीत विचार सागर मथन करते हैं। कोई तोसुना अनसुना कर देते। जहां तहां लिखा हुआ है शिव बाबा याद है? तो वर्सा भी जरूर याद आवेगा। देवा गुण होंगे तो देवता बनेंगे। अगर क्रोध, गुस्सा आदि आसुरी गुण होंगे तो ऊंच पद पा न सकेंगे। वहां तो भूत होते ही नहीं। रावण ही नहीं तो रावण की सेना ही कहां से आई। देह अहंकार, काम -क्रोध ..यह है सब से बड़े2 भूत। उनको निकालने की कोशिश करनी चाहिए। भगवानुवाच इस भूत को निकालो। फिर भी निकालते नहीं। पुरुषार्थ ही नहीं करते भूतों को भगाने का। योग बल नहीं है। योगबल ही भूतों को भगावेगा। ज्ञान बल नहीं। योग में भी कमजोर हैं। सारा दिन देखते रहते हैं घूमने का शौक बहुत है। सर्विस का शौक नहीं। घूमने धक्के खाने का शौक तो भूतों को छोड़ता है। भूतों को भगवाने का रास्ता एक ही है। बाप की याद से ही भूत भागते हैं। अच्छा ओम।

(22-4-68 प्रातः) :-कहते हैं हम बेहद के बाप को भूल जाते हैं। और अज्ञान काल में कब ऐसे कहते थे हम लौकिक बाप को भूल जाते हैं। गठर में डालने वाले बाप को याद करते हो। और उस गठर से निकालने वाले बाप को भूल जाते हो। बाप कहते हैं माया के तूफान और मल कितना भी आवे परन्तु तुमको हिलना न है। महावीर बच्चे डरेंगे नहीं। किसन2 के तूफान आवेंगे उन से डरना न है। कर्मेन्द्रियों से कर्म न करना है। माया बड़ी प्रबल है। कहते हैं बाबा पता नहीं क्या हो गया है। माया ने जादू लगा दिया है। तो बाप समझाते रहते हैं मीठे2 बच्चों याद करो कट निकल जावेंगे। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। उस के ऊपर कट कैसे चढ़ी है खयाल तो करो। इसकोकहा जाता है कुदरत। आत्मा जो तमोप्रधान बनी है वह बाप की याद से सतोप्रधान बनेगी। बाप को याद बिगर और कोई उपाय है नहीं। अच्छा ओम।

यह ज्ञान बड़ा ही वन्डरफुल है। कोई का बुद्धि में मुश्किल ठहरता है। घड़ी2 थक जाते हैं। राजाई लेना है तो श्रीमत पर पूरा चलना है। अपनी मत काम नहीं आवेगी। जीते जी वानप्रस्त में जाना है। तो सभी कुछ किसको देना पड़े। वारस तो इनको बनाना पड़े ना। भक्ति मार्ग में भी वारस बनाते हैं। दान करते हैं परन्तु अल्प काल के लिए। यहां तो वारस नाना होता है जन्म जन्मान्तर के लिए। गायन भी है फालो फादर। जो फालो करते हैं वही पद पाते हैं। अच्छा ओम।